अथवा

समुच्चय अर्घ

प्रभुजी अष्ट द्रव्य जु ल्यायो भावसों,
प्रभु थांका हरष हरष गुण गाऊं महाराज।
यो मन हरख्यो प्रभु थांकी पूजा जी रे कारणे।।
प्रभुजी थांकी पूजा भवि जन नित करै।
ताका अशुभ कर्म कटजाय महाराज।।

यो मन.....

प्रभुजी थांकी पूजा भवि जन नित करै।
ताका अशुभ कर्म कटजाय महाराज।।
यो मन हरख्यो प्रभु थांकी पूजा जी रे कारणे।।

प्रभुजी इन्द्र धरणेन्द्र जी सब मिलि गाय।
प्रभुजी थे छो जी अनन्ताजी गुणवान।
थाने तो सुमर्‌यां संकट परिहरे महाराज।।

यो मन.....

प्रभुजी थे छो जी साहिब तीनों लोक का।
जिनराज मैं छूंजी निपट अज्ञानी महाराज।।

यो मन.....

प्रभुजी थांका तो रुप को निरखन कारण।
सुरपति रचिया छैं नयन हजार महाराज।।

यो मन.....

प्रभुजी नरक निगोद में भव भव मैं रुल्यों।
जिनराज सहिबा छै दुःख अपार महाराज।।

यो मन.....

प्रभुजी अब तो शरणो जी थारो मैं लियो।
किस विध कर पार लगावो महाराज।।

यो मन.....

प्रभुजी म्हारो तो मनड़ों थामें घुल रह्यो।
ज्यों चकरीबिच रेशम डोरी महाराज।।

यो मन.....

प्रभुजी तीन लोक में हैं जिन बिम्ब।
कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय पूजस्यां महाराज।।
यो मन.....

प्रभुजी जल चंदन अक्षत पुष्प नैवेद्य ।
दीप धूप फल अर्घ्य चढ़ाऊं महाराज।।
जिन चैत्यालय महाराज सब चैत्यालय जिनराज।।
यो मन.....

प्रभुजी अष्ट द्रव्य जू ल्यायो बनाय।
पूजा रचाऊं श्री भगवान की।।
यो मन.....

ॐ ह्रीं भाव पूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करै करावै, भावना भवै, श्री अरहन्तजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी, पंचपरमेष्टीभ्यों नमः, प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः, दर्शनविशुद्धयादिषोडषकारणेभ्यों नमः उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यों नमः, सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यकचारित्रेभ्यो नमः, जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर नगरी के विषै, ऊर्ध्व लोक, मध्य लोक, पाताल लोक विषै, विराजमान कृत्रिम-अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्या नमः, विदेह क्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः, पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के सातसै बीस जिनालयेभ्यो नमः, नन्दीश्वर द्वीप सम्बन्धी बावन जिन चैत्यालयेभ्यों नमः, पंचमेरू सम्बन्धी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः, सम्मेदशिखर, कैलाश, चम्पापुर, पावापुर, गिरनार आदि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः, जैन बद्री, मूडबद्री राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा, चमत्कार, महावीर स्वामी, पद्मप्रभु स्वामी आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंत भगवन्त कृपालसन्तं श्री वृषषदि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे..... नाम्नि नगरे मासानोमुत्तमे मासे ..... मासे शुभे ..... पक्ष शुभे ..... तिथौ ..... वासरे मुनि आर्यिकानां श्रावक-श्राविकानां क्षुल्लक-क्षुल्लिकानां सकलकर्मक्षयार्थं (जलधारा) अनर्घ्य पद प्राप्तये महार्घ्य सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावपूजा वन्दनास्तवसमेतं श्री पंचमहागुरु भक्ति कायोत्सर्ग करोम्यहम्।